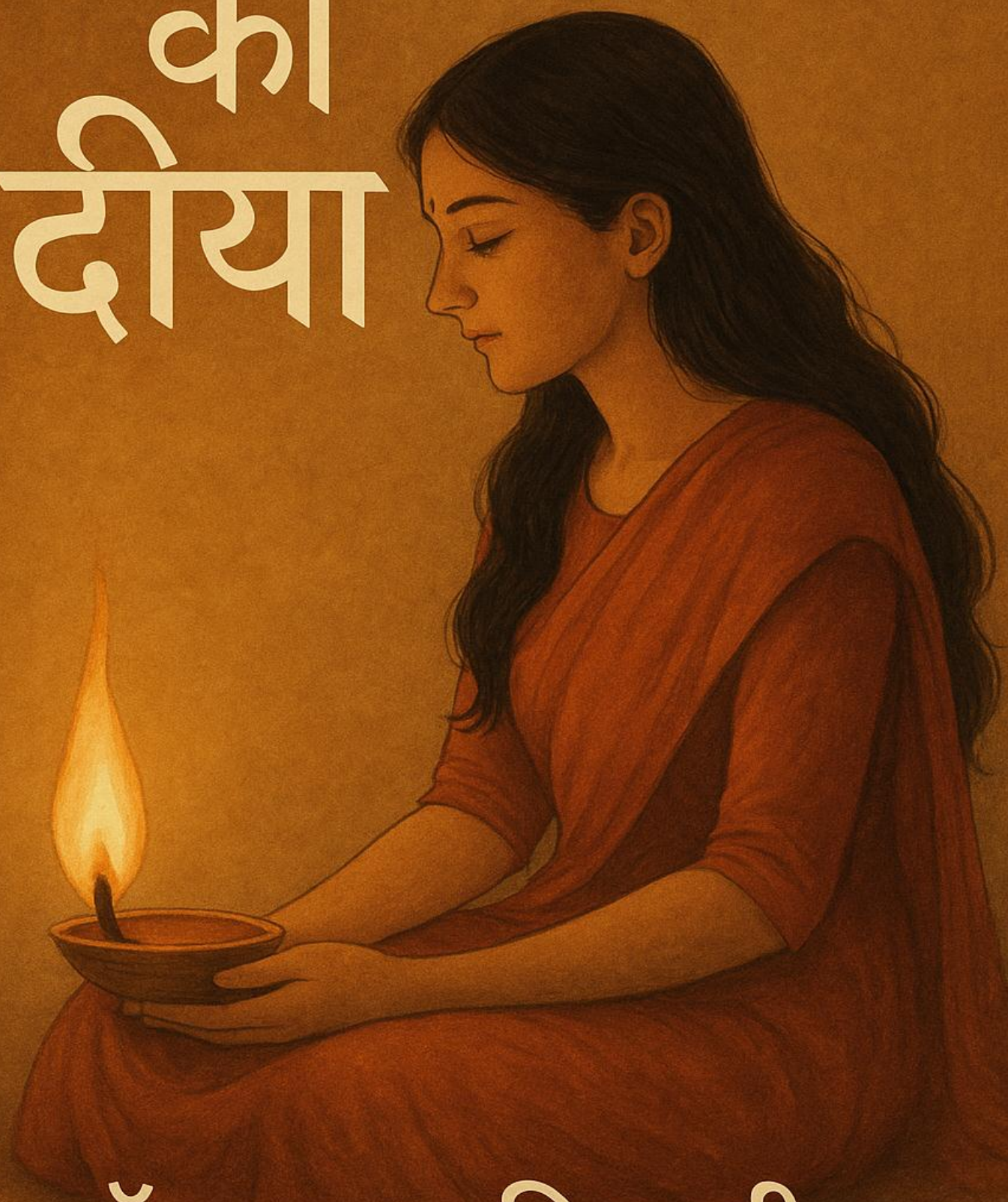


आस का दीया



डॉ. शारदा त्रिपाठी

आस का दीया



Title: AAS KA DIYA

Author's name: Dr.SHARDA TRIPATHI

Published by : MOTILAL WELFARE SEWA TRUST

Publisher's Address-

**MOTI BA NIWAS,
NANDANA WARD WEST
BARHAJ, DEORIA,
U.P. 274601**

Printer's Details-

**Faiz & Jaish Publishing Team
Nandana Pashchimi
Barhaj Deoria
U.P. 274601**

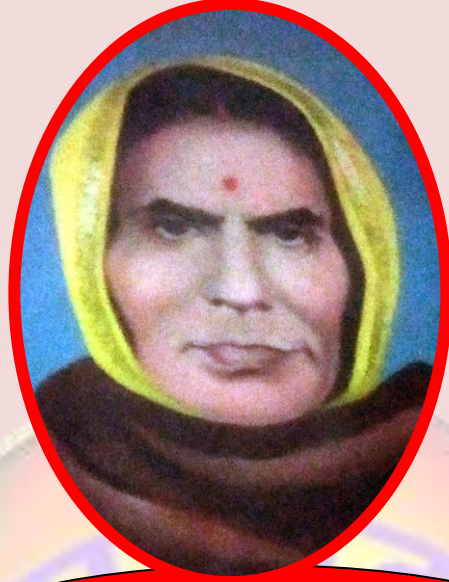
Edition Details - I st Edition

ISBN: 978-81-959022-3-1



Copyright © Motilal Welfare Sewa Trust

समर्पण



लक्ष्मी देवी उपाध्याय

पूज्यनीया ममताजी स्व० श्रीमती लक्ष्मीदेवी
उपाध्याय के चरणों में सादर समर्पित ।



- डॉ. शारदा त्रिपाठी

कविता की प्रेरणा

समय मेरे पास अधिक हो गया था। ऐसे में एक बार बबुआ (मेरे उत्तम भ्राता) ने मुझपे कहा— 'तुम कहानो, लेख, कविता यानी कुछ कुछ लिखो' । इसके बाद मेरी जिज्ञासा विभिन्न प्रकार से बढ़ी। एक दिन —मस्तिष्क का ज्वार जिह्वाग्र पर फूट पड़ा, 'आज अकेले रहा न जाए'। इस पंक्ति को बार बार दुहराने के बाद दो-चार शब्द स्वतः इस पंक्ति के साथ जुट गए । ध्यान से देखा तो यह एक नन्ही सी कविता थी ।

मेरी जिज्ञासा और आगे बढ़ी तथा मैं कुछ सोचने और कुछ लिखने लगी। थोड़ा संकोच और थोड़ी हिम्मत करके इन्हे प्रकाश में लाने के लिए आखिर इसका जिक्र बाबूजी से कर दिया। उन्होंने इसे साज-संवार कर जो उपयुक्त आकार प्रदान किया वह मेरे लिये 'आस का दिया' बन गया है जिसकी रोशनी मेरा पथ आलोकित करेगी ।

अन्ततः इन कविताओं को अनेक बार गुन गुना कर मैंने स्वयं विचार किया और इन्हें अपने से तौला महज यह जानने के लिए कि वजनी ये कविताएँ हैं या नहीं या मैं खुद । और अन्त में इस नतीजे पर पहुँची कि बजनौ में मैं हूँ क्योंकि इन कविताओं में जो कुछ भी है सब मेरी निजी अनुभूतियाँ हैं ।

— डॉ. शारदा त्रिपाठी

मां हमारी

कैंसर जैसे भयानक रोग से मां पीड़ित थी। कैंसर इन्स्टीट्यूट कानपुर में आपरेशन हुआ था।
हालत गम्भीर थी। मैं बरहज के मकान में थी तभी यह कविता बनी कि—

धन्य है तू माँ हमारी
दरस हित तेरे हमारे—
दो नयन प्यासे दुखारी
धन्य है.....

प्रार्थना प्रभु से यही
निशि — दिन हमारी
है जहाँ भी तू रहे—
हर दम सुखारी
धन्य है.....

काश, होती आज तेरे पास
इस तरह वञ्चित न होती—
सेविका हत आस
पर विवस मैं—
पहुँच पाती हूँ न तेरे पास
हूँ खड़ी निरुपाय मन्दिर द्वार—
जोड़े हाथ !
मूर्ति ममता की निराली, माँ हमारी !
धन्य है तू माँ हमारी !

लूना-पूना और स्कूल

बस्ता डाल गले में लूना
चू-चू करती आती है
आँख खुशी से भर जाती-
जब टा-टा करके जाती है

पूना मन को धैर्य बताती-
मैं जब पढ़ने जाऊँगी,
बाय-बाय करके जाऊँगी
म्याऊ - म्याऊ आऊँगी

दोनों की भोली बातों ने
मन इतना अभिराम किया
बिन सोचे-बिन समझे लिख -
यह कविता मैंने नाम किया



आस का दिया

व्याकुल पंछी नील गगन में उड़ने को मजबूर
जीवन के संघर्षों में यह जूझ रहा भरपूर

आंचल में जो छिपा है
इक आस का दिया है
बाहर रमा पिया है
भीतर बसा पिया है

मदहोश कर कभी—कभी
बेहोश कर न देना
मेरे आस के दिये को—
चल दें न लूट कर वो

वीरान कर न दें वो
इस मन की वाटिका को
आँगन में जल रहा जो
इक आस का दिया है
बाहर बसा पिया
भीतर बसा पिया है
आंचल में.....



सूना आँगन

कहना कि मन का आँगन
तुम बिन पड़ा है सूना
तेरी याद के सहारे
इक लौ सी टिम-टिमाती

कभी इक हवा का झोंका
उस पर भी कंप-कंपाता
वह थर-थरा सी जाती
कभी लड़ खड़ा सी जाती

साँसे न छूट पाती
आशा न टूट पाती
नागिन सी रात मेरी—
विकराल बन खड़ी है

कहना कि बेकली है
उलझन हर इक घड़ी है
ऐसा न हो कभी ये
मेरी प्यास ही बुझा दें

कोई जहर सा अमरित
नस-नस में यू पिला दे
कहना कि.....

गहन अन्धेरे में हूँ बैठी
आस का दीपक लेकर
चाँद सितारों से मैं बोलू
नाम तुम्हारा लेकर

ऐ चाँद, कर करम तू
प्रियतम को दे खबर तू
सदियाँ गुजर गयी है
तनहा भटक रही हूँ

कुछ मुझसे उनकी कहना
कुछ उनसे मेरी कहना
कहना कि मन का आँगन
तुम बिन पड़ा है सूना

तेरी याद के सहारे
इक लौ सी टिम टिमाटी
कहना कि.....



एक दर्द

एक दर्द सा उठता है मन में
कुछ बात हुई वर्षों पहले
चुभती रहती जो नस-नस में
एक दर्द सा उठता है मन में

थी रात तुम्हारे नाम लिखी
आँचल डाले सच्चाई की
जो बात हुई थो हँस-हँस के
एक दर्द सा उठता है मन में

घायल हूँ नहीं मैं ठोकर से
स्मृति घायल मुझको कर देती
संयम तन-मन का टूट गया
जजबात उठे जो नस-नस में

एक दर्द सा उठता है मन में
एक दर्द स उठता है मन में



पुजारिन

देव, तुम्हारी एक पुजारिन
दर्शन के हित प्यासी
ये समाज के कुटिल नयन
दिल में चुभते नशतर से
गिरते – पड़ते तुम तक आई
टकराती पत्थर से
बाँध धैर्य का टूट रहा है कैसी तेरी दास ।
दर्शन के हित प्यासी ।
देव, तुम्हारी....

कैसा चक्र चला असत्य की—
होती है अगुवानी
सच की चीख रहे घुट-घुट कर
प्रीति रहे बेपानी
तेरे द्वार खड़ी है लुटकर तनहा, तृषित, दासी
दर्शन के हित प्यासी ।
देव, तुम्हारी.....



देखा है एक बार

देखा है तुमको एक बार
कभी आँख मूद कभी खोल आँख
तुम पर निसार हो बार—बार
देखा है तुमको एक बार।

आशायें पहुंची यौवन पर
अनजान बढ़ी जीवन पथ पर
मन मस्त निगाहों ने देखा
दे मूक निमन्त्रण बार—बार ।
देखा है.....

भूलेंग व लमहे कैसे
आसान नहीं भुलवा देना
तिरछी कटार बन दिव्य नयन
घायल कर जाते बार—बार ।
देखा है.....

तब अधर सुधा रस पान किया
था मैंने केवल एक बार
अब प्यास बुझाने की खातिर
सपनों को पीते बार—बार ।
देखा है.....

जब हुई प्रणय की शुरुआत
क्या होगा यह सोचा न कभी
जो कभी बना था दिव्य धाम
अब कसक रहा वह बार—बार ।

देखा है.....

मन मोहक दृश्य

किस भाषा में गित कर दू
यह मन मोहक दृश्य तुम्हारा

टूटे-फूटे जोड़-तोड़ के शब्दों से
लिखना गर चाहूँ भी मैं तो
वाक्य गले में अटके जाते
किस भाषा में वर्णित कर दू ।

लिखने को कुछ ललक उठी है
किन्तु ज्ञान किञ्चित न मुझे है
दीवाने की तरह निहारू
समझ मैं सागर को प्याला ।
किस भाषा में वर्णित कर दू.....

ऐसा अनुपम दृश्य देखकर
कोई क्यों न तुम्हारे वश हो
भाव न कोई उपजे दूजा
मिले युक्ति कुछ और विधाता ।
किस भाषा में वर्णित कर दू.....

पावन स्पर्श

प्रिय पावन स्पर्श तुम्हारा
अब भी सिहरन होती तन में

वर्ष कई बीते दिन गुजरे
ऋतु आए ऋतु जाए
अपलक देख उस पथ को
जिस पथ से थे तुम आए
आस न टूटी साँस न छूटी
आश्वासन पर तेरे
पलकों में हूँ पोर छुपाए
तेरी याद सहारे
अब तक वह स्पर्श न भूला
जैसे क्षण ही बीता
बिजली बन कर कौंध रहा है
पल दर पल नस-नस में
आधि-त्रयाधि में मेरा जीवन
क्षत-विक्षत सा दिखता
सब नृशंस हैं यहाँ नही करुणा दिखती है
खड़ी पुलिन पर त्रस्त करो हे कर्णधार उसपार
मेरी शुचिता में क्यों कर व्यवधान
जो है सुर-सरिता का माप
प्रिय पावन स्पर्श तुम्हारा.....

रूप तुम्हारा

मन हो जाए मुग्ध हमारा
बाले, ऐसा रूप तुम्हारा

दिल—दिमाग आँखों में तुम हो
मुड़—मुड़ कर देखें तो तुम हो
कब आएगी — ऐसी बेला—
जब होगा संसार हमारा
मन हो जाए मुग्ध हमारा,
बाले, ऐसा रूप तुम्हारा ।

होठों पर है नाम मचलता
दर्पण में है चाँद चमकता
पैरों में जंजीर पड़ी है—
होगा कब घर—घर उजियारा
मन हो जाए मुग्ध हमारा,
बाले, ऐसा रूप तुम्हारा ।

आह न कोई चाह नहीं है
और दूसरी राह नहीं है
हम तसवीर लिए बैठे हैं
मन ने बारम्बार पुकारा
बाले, ऐसा रूप तुम्हारा—
मन हो जाए मुग्ध हमारा ।

आज अकले

आज अकेले रहा न जाए

प्रियतम, मेरो यह अभिलाषा
बाँहु पाश में कसी, मचलती
दूर-दूर तक जाती
रवि किरणों के साथ सुबह-
हौले-हौले उठती हूँ
लगती हूँ समेटने सब कुछ -
जाल कल्पनावों का जैसे ।
अपनी अभिलाषाए प्रियतम-
अन्तर्मन में सदा छिपाए ।
आज अकेले रहा न जाए ।



तोड़ दिया

देख रही थी सुन्दर सपना
मधुर सुहाना जीवित सपना
ऐसा सुन्दर सपना एक दिन—
तोड़ दिया।

हरियाली ही हरियाली थी
विहग वृन्द की किलकारी थी
ऐसे में एक दिन उसने ही
दिशा—दिशा झककोर दिया,
तोड़ दिया.....

निदिया हर दम रात दिखाए
किन्तु न फिर यह सपना आए
उस पटरी से अलग उठाकर
इस पटरी पर छोड़ दिया
तोड़ दिया.....



तूफान अपने आप चला जाएगा

तूफान
तूफानों का सैलाब
जाग पड़ा है
गरज उठा है—उमड़ चला है।

कहाँ जाऊँ—किधर जाऊँ
किस जगह जाऊँ ।
समुद्र के तीर ।
बंधाने मन को धीर ।
नहीं, नहीं नहीं थमेगा तूफान
मंदिर के द्वारे—
वरदान माँगने की वीरता ?
नहीं, नहीं, नहीं सुनेगा कोई
कुछ नहीं ? कहीं नहीं ?

तो फिर आखिर क्या होगा ?
तूफान अपने आप चला जाएगा
समय से ।



नारी और शीशा

लोग कहते हैं
नारी एक शीशा है
और यह सच है

मगर —
शीशा सम्हालकर रखना भी तो—
एक कला है।
समाज शोषक है
यह भी एक सच है,
फिर
इस अन्धे समाज में
नारी की
शीशा से तुलना कैसी ।



पंछी मन

पंछी बन कर डाल-डाल पर
मन चहके चहुँ ओर—
क्यों न घटा-छाए घन घोर ।

तीव्र हवा का झोंका आया
मन में किञ्चित् भय भर आया
भीतर-भीतर दिल घबराया
खग की भाषा समझ न पाई—
बोल उठा वह बड़ा शान से— 'मैं हूँ सीना जोर
क्यों न घटा छाए घन घोर'
पंछी बनकर.....

तूफानी वह रात भी आई
पलभर भी तो रहम न खाई
निष्ठुर निर्दय सीनाजोरी —
गिरी धरातल पर कमजोरी
विहग विचारे की निर्बलता, खड़ी हुई करजोर ।
क्यों न घटा छाए घनघोरे
पंछी बनकर

पात भर गया डाल-डाल का
पंछी मन का बुरा हाल था
रही याद केवल पुकार में
कठिन क्रूर बिकराल काल था
बिटप डाल तज उड़ा विहग भी, भाँप न पाया छोर ।
क्यों न घटा छाए घनघोर ।
पंछी बनकर

पवन सन्देश

पवन, अब लादे मृदु सन्देश
सुना दे प्रिय पावन उपदेश

मध्य रात्रि की हैं ये घड़ियाँ
सम्पुट में सिकुड़ी हैं कलियाँ
डूबे जाते हैं निरीह सपनों के सब परिवेश
पवन, अब ला दे मृदु सन्देश....

पंखो पर मैं उड़ती जाती
मन को किञ्चित रोक न पाती
विकल श्रान्त फिर भी जीवन पथ पर बढ़ती निःशेष
पवन, अब लादे मृदु सन्देश....

नींद गंवाई रात बिताई
किन्तु स्नेह की बूंद न पाई
ऐसे प्रिय से नेह लगाई
प्रीति-रीति कुछ समझ न पाई
लौट गली बाबुल के आई, देश हुवा परदेश
पवन, अब लादे मृदु सन्देश....

सुन्नी भोली

मुन्नी तू कितनी है भोली
वाह, बात भौ तेरी भोली
काश, नाम भी होता भोली
सभी मनाते मिलकर होली

होती हम लोगों की टोली
चाँव-चांव हुरदंग ठिठोली
जो तू-तू मैं-मैं होती तो-
फौरन चलती मीठी गोली

होता शोर अरे यह क्या है-
यह कैसी गोली की होली ।
भोली की टोली में चलती
है मीठी गोली की होली
आवो, हम भी चलकर लूटें
भर लें अपनी अपनी झोली
मुन्नी तू कितनी है भोली ।



नाम मिठाई

नाम मिठाई
मीठे बोल
खा कर माठा
होते गोल ।

लोग बजाते
ढोल पै ढोल
उठ रे, मिठाई
आँखें खोल ।

कान तराजू
नाक है बाट
मुह है कुण्टल
कैसा ठाट ।

जीभ है सीरा
होट मलाई
खाय मिठाई
होय पढ़ाई ।

नाम मिठाई
मीठे बोल
खा कर मीठा
होते गोल ।



चित चोर पिया

पलकों के दर को –
मैने ऐसे बन्द किया
इसमें बैठाया लिया—
अपना चितचोर पिया,

आँखों के रस्ते वो
दिल में समाते हैं
मन मयूर झूम उठे
हम भी खो जाते हैं
ऐसे सलोने साजन को यू तंग किया
पलकों के दर को.....

धड़कन हर नाम की है—
उनकी मुलाकातों की,
रातों में संग रहूँ
दुनिया में ख्वाबों की
ऐसे सिपाही को हमने भी दंग किया
पलकों के दर को.....

हम अकेल बालमा

तोहरी संगहीं रहि के भईली हम अकेल, बालमा ।
ताके चनवा के चकोर
ओइसे पंथ निहारु
तोर टुहुकी चले न कवनो जोर
तनिको तीहा नाहीं पावे मनवा मोर बालमा ।
तोहरी संगहीं.....

बाट निहारु रतिया—दिनवा
होखे साँझि—भोर—दुपहरिया
चले आँखियन बीच डगरिया
मनवा भरि लेलीं ई कहि के, 'तू कठोर, बालमा ।'
तोहरी संगे.....

कब्बों ऊठीं, बडठीं कब्बों
कब्बों घूमीं सूतीं कब्बों
घण्टन मोचीं रोई कब्बों
तन—मन दिहले बाटे सगरे झकझोर, बालमा ।
तोहरी संगहीं

तोहके जोहीं बाट निहारीं
केहू मिले न पर उपकारी
संग न छोड़े आँखि वेचारी
सुनि—मुनि पपिहा के बचनियां कइली भोर बालमा ।
तोहरी संगहीं

घुँघटा उठा के गोरी

कान्हें पर उठा के डोली चलले कँहरबा
अँसुवन डबल अँगनबा—दुअरवा

हुकड़ेले माई कर्काह बिछुड़ल धियरी
बाप कहें अब के जराई घरे दियरी

घुघटा उठा के गोरी गवने के ताके
जइसे चनरमा बदरिया से झाँके

घुघटा के नीचे गोरी डेग जो बढ़ावें
कवनो ओटे छिपि जाली आहट जो पावें

चोरी से चोरावेली बदनिया — नजरिया
डारि लेली पलकन झिल—मिल चदरिया



थाम्ह ले बँहिया

सइयाँ थाम्ह ले बँहिया
बड़ा ऊच-खाल रहिया, झुक्कि झुकि जाले सगरे देहिया
गिरी जाऊँ रे।

भइलीं जा हो परदेसी
हमनी को हो दूरदेसी, केहू मीले ना सनेसी
पच्छताऊँ रे। सइयाँ थाम्ह ले....

छूटल घर, आपन देस
कवनो संसा ना कलेस, कवनो चाह नाहीं शेष
बड़ी जाऊँ रे। सइयाँ थाम्ह ले....

जब तक बाटे तोहार साथ
वाटे ऊँच हमार माथ, तोहरे हाथ में बा हाथ
ना डेराऊँ रे। सइयाँ थाम्ह ले.....

बिनतीं करीं दिन-रात
जीया रहि-रहि घबरात, ना भुलाले तोहार बात
मन समुझाऊँ रे। सइयाँ थाम्ह ले....

कहीं ठौर बा ठेकाना
जाना रहता अनजाना प्रभुजी लाज बचाना
मर जाऊँ रे। सइयाँ थाम्ह ले....

जोरले बानी दूनू हाथ
अपने स्वामी जी के साथ, चाहे दिन हो चाहे रात
मुसुकाऊँ रे। सइयाँ थाम्ह ले.....

नारी का नारीत्व

नारी का नारीत्व न छेड़ो दीवाने इन्सानों
नारी से नर की उत्पत्ति है कदर करो पहचानों

आदि काल से चला आ रहा है इतिहास पुराना
पुरुष वर्ग हर जुल्म करेगा कोई क्यों न जमाना

नारी युग तब था प्रधान जब प्रकृति रही अनुकूल
नारी उत्पीड़न से उगते घर-घर बाँस-बबूल

हुबा देश आजाद मगर नारी का हुवा मजाक
भक्षक, हो जव देश समूचा हो विकास क्या खाक

नारी का अस्तित्व पुरातन जो रह पाता
आज राम राज्य फिर से आजाता मिटता नहीं समाज



उर की व्यथा

व्यर्थ सा है व्यथित उर को व्यक्त करना व्यक्ति से
विष बना है बिश्व सारा कर बगावत शक्ति से

है जरूरत नश्वरों की जख्म हों गहरे जभी
तेज खज्जर धार से है घाव भर जाता तभी

जिक्र छिड़ते ही तुम्हारा बन्द हो जाते अधर
घूट गम की पी लिया सागर बनाकर अश्रु का

वे नये अन्दाज में विश्वास के भागी बने
किन्तु धोखा हो गया उनके पुराने भाव से

जो हुई नेकी कभी उनके करम के वास्ते
बद हुवे उनसे मगर बेशक बचे बदनाम से



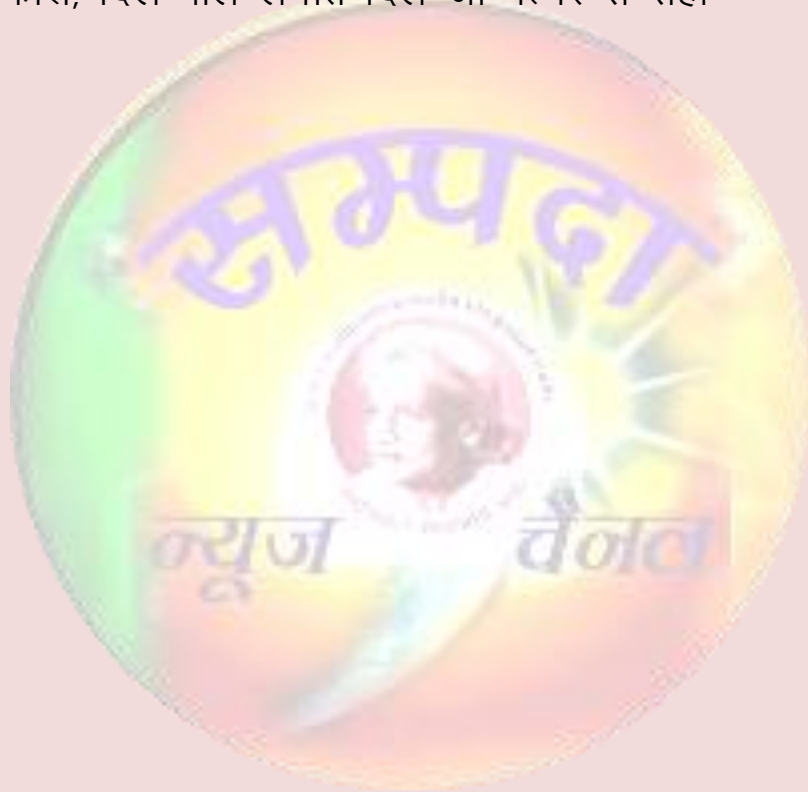
पत्थर का सनम

एक चांटा मार कर बोला पत्थर का सनम
खैरियत होगी न सुन लू बात फिर, ऐ जानेमन

इतना गहरा हो गया तुम पै यकीं मेरे सनम
साँस से आशा बँधी है, बात होठों में दफन

तेरी ठोकर से मुझे है मिल गया जीवन नया
हैं समझ में आ गयी तहजीब है रश्मे हया

फख्र है मुझको कि मैंने सौख यह पाई नयी
काश, दिल बाले लगाते दिल जो पत्थर से सही



मुक्तक

शिकवा नहीं कि क्यों वे हमें भूल जाते हैं
रहते हैं सराबोर भो, हम डूब जाते हैं

निशि—दिन दिखते रहते हैं सब
भिन्न—भिन्न बहुरूप बनाये
दुनिया की इस चकाचौंध में
रहते अपनी धाक जमाये

प्रिय बोलो अप्रिय बोलो
कुछ बोलो तब मुस्काऊँ मैं,
गर बोल न पावो विष घोलो
चिर निद्रा में सो जाऊँ मैं

लिखती जाऊँ लिखती जाऊँ
भाव हृदय के लिखती जाऊँ
इस कोरे टुकड़े कागज पर
लिख लिख मन बहलातौ जाऊँ

नये वर्ष पर ईश्वर से है नित्य प्रार्थना मेरी
भले—बुरे का ज्ञान कराना यही कामना मेरी

रचना काल—सन् 1982 से सन् 1988 तक